

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 01-11-2025

आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष

भारत के महानगरों में भूमि धंसाव का खतरा

भारत-अमेरिका द्वारा प्रमुख रक्षा साझेदारी के लिए 10 वर्षीय रोडमैप पर हस्ताक्षर

संयुक्त नेताओं की घोषणा: दक्षिण कोरिया में APEC शिखर सम्मेलन

भारत 25 वर्षों में 30 टिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा

एआई डेटा केंद्रों की बढ़ती ऊर्जा मांग

नेट-जीरो भारत के लिए कार्बन कैप्चर

संक्षिप्त समाचार

भारत के शाही गज्यों का संग्रहालय

जार्जिया भारतीय मेडिकल छात्रों के लिए नया केंद्र

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बनाए 3 गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

‘आभास’ ऑनलाइन स्टोर

जनगणना स्व-गणना परीक्षण शक्ति होगा।

ਵਿਭਿੰਨ ਸਮਾਂ ਸਵਾਲ ਪਾਲਨ ਜਨਗਾਇਤਰਾ 2025

केंद्रीय महाराष्ट्री वक्त्रवा पातक

आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष

समाचारों में

- प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने सामाजिक सुधार, शिक्षा और वैदिक चिंतन में आर्य समाज की 150 वर्षों की विरासत की सराहना की।
 - प्रधानमंत्री मोदी ने आर्य समाज से “ज्ञान भारतम् मिशन” का समर्थन करने का आग्रह किया – प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण और भारत की ज्ञान परंपरा को संरक्षित करने हेतु युवाओं को प्रेरित करना।

आर्य समाज के बारे में

- स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक शिक्षाओं से प्रेरित होकर 1875 में बॉम्बे में आर्य समाज की स्थापना की, जिसके दस सिद्धांतों को 1877 में लाहौर में अंतिम रूप दिया गया।
- इस आंदोलन के मूल सिद्धांत वेदों की अचूकता पर आधारित हैं, जो तर्कशीलता और वैदिक मूल्यों की ओर लौटने पर बल देते हैं।
- इसका नारा है “वेदों की ओर लौटो” और आदर्श वाक्य है “कृष्णन्तो विश्वमार्यम्” (“आओ हम विश्व को आर्य बनाएं”)।

मुख्य सुधार

- धार्मिक:** मूर्तिपूजा, कर्मकांड और पुरोहितों के प्रभुत्व को अस्वीकार किया। एक ईश्वर और सत्य की खोज पर आधारित तर्कसंगत धार्मिक समझ को बढ़ावा दिया।
- सामाजिक:** जन्म आधारित जाति, अस्पृश्यता, बाल विवाह और विधवा जीवन की मजबूरी का विरोध किया। अंतरजातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा और सामाजिक सेवा का समर्थन किया।
- शैक्षिक:** वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय हेतु डीएवी स्कूलों और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिससे सामाजिक गतिशीलता एवं राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।

भारतीय राष्ट्रवाद और सामाजिक परिवर्तन में भूमिका

- आर्य समाज के सदस्य जैसे लाला लाजपत राय, भगत सिंह आदि ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण

योगदान दिया, स्वदेशी और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।

- उनके प्रयासों ने आधुनिक शिक्षा, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय गौरव पर बल दिया, जिससे औपनिवेशिक विरोध की भावना को बल मिला तथा सुधारवादी आदर्शों के भीतर कार्य हुआ।

आधुनिक भारत में आर्य समाज की प्रासंगिकता

- महिला नेतृत्व में प्रगति:** आर्य समाज की प्रारंभिक महिला सशक्तिकरण की वकालत आज की राष्ट्रीय पहलों जैसे “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ”, “नारी शक्ति वंदन अधिनियम” और “ड्रोन दीदी” से सामंजस्यशील है।
- गुरुकुल परंपरा और शैक्षिक सुधार का संरक्षण:** आर्य समाज ने भारत की गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित किया, जिसमें वैदिक शिक्षा और आधुनिक ज्ञान का समन्वय है।
 - यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से सामंजस्यशील है, जो मूल्य आधारित और चरित्र निर्माण पर केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देता है।
- वैदिक आदर्श और वैश्विक प्रासंगिकता:** “कृष्णन्तो विश्वमार्यम्” का आदर्श भारत की विकास नीति को दर्शाता है — राष्ट्रीय प्रगति के माध्यम से वैश्विक कल्याण।
 - इसके आदर्श मिशन LiFE, एक सूर्य एक विश्व एक ग्रिड(One Sun One World One Grid) और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसी पहलों में परिलक्षित होते हैं, जो विश्व में सतत एवं आध्यात्मिक जीवनशैली को फैलाते हैं।

Source: PIB

भारत के महानगरों में भूमि धंसाव का खतरा

संदर्भ

- हाल ही में प्रकाशित अध्ययन “डूबते भारतीय महानगरों में भवन क्षति का जोखिम” में खुलासा हुआ है कि भारत के पाँच प्रमुख शहरों—दिल्ली, चेन्नई, मुंबई, कोलकाता

और बैंगलुरु—में लगभग 878 वर्ग किलोमीटर भूमि धंस रही है।

भूमि धंसना क्या है?

- नेशनल ओशैनिक एंड एट्मॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) के अनुसार, भूमि धंसाव पृथ्वी की सतह का धीरे-धीरे नीचे जाना, झुकना या गिरना है, जो उपसतही सामग्री जैसे मृदा, भूजल या खनिजों की हानि या निष्कर्षण के कारण होता है।
- यह प्राकृतिक रूप से (कार्स्ट प्रक्रियाएँ, टेक्टोनिक गतिविधियाँ या मृदा का संकुचन) या मानव गतिविधियों (खनन या निर्माण कार्य) से प्रेरित हो सकता है।
- विश्व भर में कई शहर धीरे-धीरे धंस रहे हैं—इंडोनेशिया का जकार्ता, फिलीपींस का मनीला, और भारत का जोशीमठ हाल ही में भूमि धंसने की समस्या का सामना कर चुका है।

प्रमुख निष्कर्ष

- जनसंख्या और अवसंरचना जोखिम में: यदि वर्तमान प्रवृत्ति आगामी 50 वर्षों तक जारी रही, तो लगभग 19 लाख लोग और 23,000 से अधिक इमारतें गंभीर क्षति के खतरे में होंगी।
- वर्तमान क्षति: दिल्ली, मुंबई और चेन्नई में पहले से ही 2,400 से अधिक इमारतें उच्च जोखिम में हैं।
- भूवैज्ञानिक विविधता: जो शहर मुलायम जलोद मृदा पर बसे हैं (दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई) वे अधिक संवेदनशील हैं, जबकि आग्नेय या रूपांतरित चट्टानों पर बसे शहर (बैंगलुरु) अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं।

भूमि धंसने के कारण

- अत्यधिक भूजल निष्कर्षण: निंतर भूजल निकासी से एक्विफर का संकुचन होता है, जिससे भूमि की सतह नीचे धंसती है।
- शहरी अवसंरचना का भार: सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में ऊँची इमारतों का भार भूमि विकृति को तीव्र करता है।
- अप्रभावी शहरी नियोजन: पुनः प्राप्त या मुलायम मृदा वाले क्षेत्रों में अनियंत्रित निर्माण कार्य संवेदनशीलता को बढ़ाता है।

- जलवायु तनाव: अनियमित वर्षा और शहरी सीलिंग के कारण भूजल पुनर्भरण में कमी समस्या को और बढ़ाती है।
- प्राकृतिक कारण: भूगर्भीय दोष, टेक्टोनिक गतिविधियाँ और भूमिगत चट्टानों (जैसे कार्स्ट क्षेत्रों में चूना पत्थर) का विघटन।
- अनियंत्रित कचरा निष्पादन: कमज़ोर या दलदली मृदा पर ठोस अपशिष्ट का ढेर भूमि पर भारी दबाव डालता है।

भूमि धंसने के प्रभाव

- अवसंरचना क्षति: इमारतों में दरारें, सड़कों में विकृति, पाइपलाइन और जल निकासी नेटवर्क में बाधा।
- बाढ़ का खतरा: भूमि की ऊँचाई में कमी, विशेष रूप से मुंबई और चेन्नई जैसे टटीय शहरों में, भारी वर्षा या तूफानी लहरों के दौरान बाढ़ की संभावना को बढ़ाती है।
- आर्थिक लागत: मरम्मत और पुनर्निर्माण की लागत आने वाले दशकों में काफी बढ़ सकती है।
- संयुक्त खतरे: भूमि धंसना भूकंप और समुद्र स्तर में वृद्धि के प्रभावों को अधिक गंभीर बना सकता है, जिससे शहरी सुरक्षा को बहुआयामी खतरे उत्पन्न होते हैं।

आगे की राह

- मिट्टी परीक्षण और सिमुलेशन मॉडल: भूमि धंसने की संभावना का पूर्वानुमान लगाने के लिए इनका उपयोग किया जाना चाहिए।
- InSAR और ग्राउंड सेंसर: उपग्रह रडार इंटरफेरोमेट्री और भूमि सेंसर की स्थापना से सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में आपदाओं को रोका जा सकता है।
- शहरी जल-भूवैज्ञानिक क्षेत्र निर्धारण: बड़े पैमाने पर निर्माण से पहले मृदा और भूजल की विशेषताओं का अनिवार्य मानचित्रण आवश्यक है।
- अवसंरचना डिज़ाइन: असमान भूमि गति को ध्यान में रखते हुए भवन संहिता को सुदृढ़ किया जाना चाहिए और मुलायम मृदा वाले क्षेत्रों में लचीली नींव तकनीकों को अपनाया जाना चाहिए।

Source: DH

भारत-अमेरिका द्वारा प्रमुख रक्षा साझेदारी के लिए 10 वर्षीय रोडमैप पर हस्ताक्षर

समाचारों में

- भारत और अमेरिका ने रक्षा क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग और साझेदारी को दिशा देने के लिए एक ऐतिहासिक 10-वर्षीय रोडमैप पर हस्ताक्षर किए।
 - यह समझौता मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित 12वें आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक – प्लस (ADMM-Plus) के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष पीट हेगसेथ के बीच द्विपक्षीय बैठक के बाद हुआ।

10-वर्षीय रोडमैप की प्रमुख विशेषताएँ

- यह संयुक्त रक्षा उत्पादन, खुफिया जानकारी साझा करने, तकनीकी सह-विकास और सैन्य अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाने पर बल देता है।
- दोनों पक्षों ने युद्ध अभ्यास, मालाबार एवं टाइगर ट्रायम्फ जैसे बहुपक्षीय सैन्य अभ्यासों को सुदृढ़ करने और आपदा प्रतिक्रिया तथा आतंकवाद-रोधी साझेदारी को विस्तार देने की प्रतिबद्धता जताई।
- यह समझौता प्रत्यक्ष रक्षा बिक्री और उन्नत उपकरणों जैसे गोला-बारूद, ड्रोन एवं निगरानी विमान के संयुक्त विकास को प्रोत्साहित करता है।
- यह “मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड” के अंतर्गत स्वदेशी निर्माण का समर्थन करता है और भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता एवं सैन्य आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है।

भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग

- अमेरिका ने 2016 में भारत को “प्रमुख रक्षा साझेदार” (Major Defence Partner - MDP) घोषित किया।
- 2016 से 2020 के बीच दोनों देशों ने चार प्रमुख समझौते किए, जिनमें लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरॅंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) 2016, कम्युनिकेशन्स कम्पैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA) 2018, और बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) 2020 शामिल हैं।
- 2024 में, दोनों देशों ने सुरक्षा आपूर्ति व्यवस्था (SOSA) और संपर्क अधिकारी नियुक्ति संबंधी समझौता ज्ञापन

पर हस्ताक्षर किए, जिससे रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को मजबूती मिली।

- 2025 में, भारतीय और अमेरिकी सैनिकों ने अलास्का के फोर्ट वेनराइट में दो सप्ताह का सैन्य अभ्यास “युद्ध अभ्यास” किया।
 - भारत की रक्षा सूची में अमेरिका-निर्मित उपकरण शामिल हैं जैसे सुपर हरक्यूलिस, ग्लोबमास्टर, पोसाइडन विमान; चिनूक, सीहॉक एवं अपाचे हेलीकॉप्टर; हारपून मिसाइलें; और M777 होविल्जर तोपें।

चुनौतियाँ

- रूस के साथ भारत के संबंध और रणनीतिक स्वायत्तता की नीति अमेरिकी अपेक्षाओं को जटिल बना सकती है।
- अमेरिकी निर्यात नियंत्रण और बौद्धिक संपदा (IP) संबंधी चिंताएँ अत्याधुनिक प्रणालियों तक पूर्ण पहुँच को सीमित कर सकती हैं।
- सैन्य सिद्धांतों और उपकरण मानकों में अंतर सैन्य अंतर-संचालन में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

Sources: TH

संयुक्त नेताओं की घोषणा: दक्षिण कोरिया में APEC शिखर सम्मेलन

संदर्भ

- हाल ही में दक्षिण कोरिया के योंगजू में आयोजित एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) शिखर सम्मेलन 2025 का समापन हुआ, जिसमें APEC नेताओं की योंगजू घोषणा (2025), APEC कृत्रिम बुद्धिमत्ता पहल, और जनसंख्या संरचना परिवर्तनों पर सहयोग के लिए APEC रूपरेखा को अपनाया गया।

APEC शिखर सम्मेलन (2025) की प्रमुख झलकियाँ

- नेताओं की घोषणा (योंगजू घोषणा) को अपनाना: APEC नेताओं ने एक संयुक्त घोषणा को स्वीकृति दी, जिसमें उन्होंने निम्नलिखित प्रतिबद्धताओं की पुनः पुष्टि की:
 - एशिया-प्रशांत क्षेत्र में मुक्त और खुला व्यापार
 - आपूर्ति श्रृंखला की लचीलापन को सुदृढ़ करना

- ▲ समावेशी और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देना
- ▲ डिजिटल परिवर्तन और जलवायु कार्बवाई को आगे बढ़ाना
- **अमेरिका – चीन संवाद:** यह द्विपक्षीय तनावों में सुधार का संकेत था, जिसमें दोनों नेताओं ने व्यापार वार्ता फिर से शुरू करने और कुछ वस्तुओं पर शुल्क कम करने पर सहमति व्यक्त की।
- **जलवायु और सततता पर ध्यान:** घोषणा में निम्नलिखित प्रतिबद्धताएँ शामिल थीं:
 - ▲ स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण को तीव्र करना
 - ▲ जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे का समर्थन करना
 - ▲ कार्बन बाजारों और हरित वित्तपोषण पर सहयोग को बढ़ाना
- **डिजिटल व्यापार और नवाचार:** सदस्य देशों ने निम्नलिखित आवश्यकताओं पर बल दिया:
 - ▲ डिजिटल व्यापार मानकों का सामंजस्य
 - ▲ सीमा-पार डेटा प्रवाह को बढ़ावा देना
 - ▲ लघु और मध्यम उद्यमों (SMEs) को डिजिटल उपकरणों तक पहुंच प्रदान करना

एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) के बारे में

- यह एक क्षेत्रीय आर्थिक मंच है जिसकी स्थापना 1989 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं के बीच परस्पर निर्भरता को सुदृढ़ करने के लिए की गई थी।
- यह ‘देशों या राष्ट्रों’ के बजाय ‘अर्थव्यवस्थाओं’ शब्द का प्रयोग करता है ताकि राजनीतिक या क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के बजाय आर्थिक और व्यापार सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।
- यह सहयोग और सहमति के माध्यम से कार्य करता है, जिसमें बाध्यकारी संधियों के बजाय स्वैच्छिक भागीदारी पर बल दिया जाता है।
 - ▲ सभी सदस्य अर्थव्यवस्थाओं को समान अधिकार प्राप्त हैं, और निर्णय संवाद के माध्यम से सामूहिक रूप से लिए जाते हैं।
- **सदस्य अर्थव्यवस्थाएँ (21 सदस्य):** ऑस्ट्रेलिया; ब्रुनेई दारुस्सलाम; कनाडा; चिली; चीन; हांगकांग,

चीन; इंडोनेशिया; जापान; दक्षिण कोरिया; मलेशिया; मेक्सिको; न्यूजीलैंड; पापुआ न्यू गिनी; पेरू; फिलीपींस; रूस; सिंगापुर (APEC सचिवालय और मुख्यालय); चीनी ताइपे; थाईलैंड; अमेरिका; और वियतनाम।

APEC क्या करता है?

- APEC यह सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है कि वस्तुएँ, सेवाएँ, निवेश और लोग सीमाओं के पार आसानी से गतिशील हों। इसके मुख्य उद्देश्य हैं:
 - ▲ **व्यापार सुविधा:** सीमा-पार आवाजाही को सरल बनाने के लिए सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को आसान बनाना और बाधाओं को कम करना।
 - ▲ **नियामक सामंजस्य:** निर्यात एवं आयात को अधिक कुशल बनाने के लिए नियमों और मानकों का सामंजस्य।
 - ▲ **आर्थिक एकीकरण:** सहयोग एवं नवाचार के माध्यम से मुक्त व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना।

APEC में भारत की रुचि

- भारत ने APEC में शामिल होने की निरंतर इच्छा व्यक्त की है, इसे व्यापार, निवेश और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने का एक द्वार माना जाता है।
- भारत के विदेश मंत्रालय ने ‘APEC और भारत: एक मूल्यांकन’ जैसे प्रकाशनों एवं चर्चाओं की मेजबानी की है, जिसमें समूह के समावेशी तथा सतत विकास लक्ष्यों में भारत के संभावित योगदान को रेखांकित किया गया है।

भारत अभी तक सदस्य क्यों नहीं है?

- APEC की सर्वसम्मति आधारित निर्णय प्रक्रिया, जिसमें सभी वर्तमान सदस्यों की एकमत सहमति आवश्यक होती है।
- भारत के व्यापार उदारीकरण की गति और नियामक वातावरण को लेकर चिंताएँ।
- अमेरिका-चीन तनाव के बीच भू-राजनीतिक संतुलन की आवश्यकता।

रणनीतिक प्रभाव

- यह भारत की एशिया-प्रशांत व्यापार मानकों को आकार देने की प्रत्यक्ष क्षमता को सीमित करता है।

- यह भारत की क्षेत्रीय समूहों जैसे इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF) में स्थिति को प्रभावित करता है, जहाँ APEC सदस्य प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

Source: TH

भारत 25 वर्षों में 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा

संदर्भ

- वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने कहा है कि अब से 20-25 वर्षों में भारत 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

परिचय

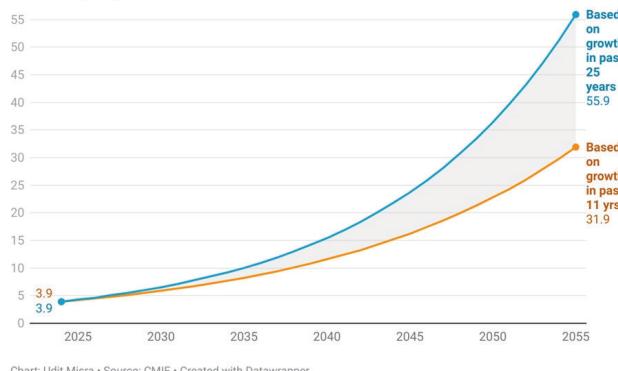
- GDP:** किसी अर्थव्यवस्था का आकार उसके वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से निर्धारित होता है।
 - GDP उस देश में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के कुल बाजार मूल्य को दर्शाता है।
 - वित्त वर्ष 2024 में भारत का GDP 3.9 ट्रिलियन डॉलर था।
- GDP की गणना:** वैश्विक संदर्भ में किसी देश का GDP अमेरिकी डॉलर में दर्शाया जाता है ताकि सभी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना आसानी से की जा सके।
 - यह GDP नाममात्र GDP होता है — वास्तविक GDP नहीं, जिसमें मुद्रास्फीति के प्रभाव को हटाया जाता है।
 - GDP का अनुमान लगाने के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है: भारत के नाममात्र GDP का अनुमान (रुपये में) और रुपये-डॉलर विनिमय दर का अनुमान।
 - दोनों महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यदि 2024 में विनिमय दर ₹65 प्रति डॉलर होती (जैसे 2014 में थी), तो भारत का ₹330 ट्रिलियन GDP \$5 ट्रिलियन होता।
 - लेकिन ₹84 प्रति डॉलर की दर पर यह केवल \$3.9 ट्रिलियन बनता है।

अनुमानित वृद्धि

- आंकड़े बताते हैं कि वित्त वर्ष 2000 से भारत के नाममात्र GDP ने 11.9% की वार्षिक चक्रवृद्धि दर (CAGR) दर्ज की है।

- इसके अतिरिक्त, भारतीय रूपया 2000 से डॉलर के मुकाबले 2.7% की CAGR से अवमूल्यित हुआ है।
- इसलिए, यदि यह मान लिया जाए कि भारत की वृद्धि दर और रुपये का अवमूल्यन आगामी 25 वर्षों तक इसी तरह जारी रहेगा, तो भारत का GDP 2048 तक \$30 ट्रिलियन को पार कर जाएगा।

India's projected GDP in \$ trillions



चुनौतियाँ

- वृद्धि की धीमी गति:** नाममात्र GDP वृद्धि 11.9% (2000–2014) से घटकर 10.3% (2014–2024) हो गई है, जो आर्थिक गति में कमी को दर्शाती है।
- रुपये का अवमूल्यन:** तीव्रअवमूल्यन (2014 से 3.08% CAGR) डॉलर में भारत के GDP मूल्य को घटाता है, भले ही रुपये में GDP स्थिर रूप से बढ़े।
- निर्यात प्रतिस्पर्धा:** सीमित विविधता और कुछ क्षेत्रों पर निर्भरता भारत की निर्यात-आधारित वृद्धि को बनाए रखने की क्षमता को कम करती है।
- बुनियादी ढांचे की कमी:** लॉजिस्टिक्स, विद्युत और शहरी बुनियादी ढांचे की खामियाँ लागत बढ़ाती हैं और औद्योगिक विस्तार को सीमित करती हैं।
- मानव संसाधन की चुनौतियाँ:** कौशल की असंगति, महिला श्रम भागीदारी की कमी, और स्वास्थ्य व शिक्षा में कम निवेश श्रम उत्पादकता को घटाते हैं।
- राजकोषीय और वित्तीय दबाव:** उच्च राजकोषीय धाटा और बढ़ता कर्ज सार्वजनिक निवेश की क्षमता को सीमित करता है।
- वैश्विक आर्थिक बाधाएँ:** भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति शृंखला में व्यवधान, और संरक्षणवादी प्रवृत्तियाँ व्यापार एवं पूँजी प्रवाह को प्रभावित कर सकती हैं।

सरकारी पहलें

- मेक इन इंडिया (2014):** घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देता है और GDP में विनिर्माण का हिस्सा 25% तक लाने का लक्ष्य रखता है।
- उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ:** 14 क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर विनिर्माण को प्रोत्साहित करती हैं ताकि निर्यात और रोजगार सृजन बढ़े।
- राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम:** आधुनिक औद्योगिक बुनियादी ढांचे और संपर्कता का विकास करता है।
- पीएम गति शक्ति (2021):** एक राष्ट्रीय मास्टर प्लान है जो सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स को एकीकृत करता है।
- भारतमाला और सागरमाला:** सड़क और बंदरगाह संपर्कता को बेहतर बनाकर लॉजिस्टिक्स लागत को कम करते हैं।
- स्किल इंडिया मिशन:** व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यबल की क्षमताओं को बढ़ाता है।
- स्टार्ट-अप इंडिया और स्टैंड-अप इंडिया:** उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देते हैं।
- मुक्त व्यापार समझौते (FTA) और वार्ताएँ:** UK, EU, UAE आदि के साथ, निर्यात बाजारों के विस्तार के लिए।
- ‘एकट ईस्ट’ और ‘इंडो-पैसिफिक’ रणनीतियाँ:** एशिया-प्रशांत के साथ आर्थिक और रणनीतिक एकीकरण को सुदृढ़ करती हैं।

आगे की राह

- विगत दशक में वृद्धि की गति धीमी हुई है, और वृद्धि दर या विनिमय दर में छोटे परिवर्तन भी दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकते हैं।
- जैसे-जैसे अर्थव्यवस्थाएँ विस्तार करती हैं, वृद्धि दर स्वाभाविक रूप से धीमी होती है, लेकिन भारत अभी भी अमेरिका और चीन की तुलना में बहुत छोटा है तथा इतनी धीमी गति वहन नहीं कर सकता।
- \$30 ट्रिलियन का अनुमान विश्वसनीय बनाने के लिए भारत को अपनी वृद्धि दर को बनाए रखना और उसे तीव्र करना होगा।

Source: IE

एआई डेटा केंद्रों की बढ़ती ऊर्जा मांग

संदर्भ

- भारत, एआई-आधारित और डेटा-गहन डेटा केंद्रों से उत्पन्न हो रही विद्युत की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) के उपयोग की संभावनाओं का पता लगा रहा है।

डेटा केंद्रों से बढ़ती बिजली की मांग

- भारत में डेटा केंद्रों की मांग को डिजिटल इंडिया अभियान, डेटा स्थानीयकरण नीतियों, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या और 5G के विस्तार से प्रेरित किया जा रहा है, जिससे IoT एवं AI जैसी डेटा-गहन तकनीकों को अपनाने में तीव्रता आएगी।
- वैश्विक स्तर पर डेटा केंद्रों को आपूर्ति की जाने वाली विद्युत 2024 में लगभग 460 TWh से बढ़कर 2030 तक 1,000 TWh और 2035 तक लगभग 1,300 TWh तक पहुँचने की संभावना है।
- डेटा केंद्रों की विद्युत खपत:** एआई वर्कलोड्स में बड़ी संख्या में ग्राफिक प्रोसेसिंग यूनिट्स (GPUs) का उपयोग होता है, जिनके प्रत्येक रैक की खपत 80–150 किलोवाट होती है, जबकि पारंपरिक एंटरप्राइज सर्वरों की खपत 15–20 किलोवाट होती है।
 - यह कम्प्यूटेशनल तीव्रता विद्युत की असीम मांग में वृद्धि करती है, जिससे एआई डेटा केंद्र क्षेत्र में ऊर्जा खपत में वृद्धि का सबसे बड़ा कारक बन गया है।
- इस बढ़ती मांग के कारण गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी प्रमुख टेक कंपनियाँ विश्वसनीय एवं कार्बन-मुक्त ऊर्जा के लिए परमाणु ऊर्जा समाधानों की ओर रुख कर रही हैं।

स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) की आवश्यकता

- एआई-आधारित डेटा केंद्रों को अपनी तीव्रता से बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए सतत और स्वच्छ ऊर्जा समाधानों की आवश्यकता है।
- हालाँकि नवीकरणीय ऊर्जा कंपनियों की प्रथम पसंद रही है, लेकिन इसमें अनियमितता और अपर्याप्त भंडारण जैसी अंतर्निहित चुनौतियाँ हैं। ऐसे में परमाणु ऊर्जा एक व्यवहार्य समाधान प्रदान करती है क्योंकि यह स्वच्छ और चौबीसों घंटे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करती है।

- SMRs को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि ये लचीलापन और स्केलेबिलिटी के माध्यम से बेहतर सुरक्षा प्रदान करते हैं, क्षमता में क्रमिक वृद्धि की सुविधा देते हैं, दूरस्थ या ऑफ-ग्रिड अनुप्रयोगों के लिए अनुकूल होते हैं, और पूर्वनिर्माण के माध्यम से लागत प्रभावी निर्माण संभव बनाते हैं।

स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) क्या हैं?

- स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) उन्नत परमाणु रिएक्टर हैं जिनकी प्रति यूनिट विद्युत उत्पादन क्षमता 300 मेगावाट (MW(e)) तक होती है, जो पारंपरिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की क्षमता का लगभग एक-तिहाई है।
 - स्मॉल:** पारंपरिक परमाणु रिएक्टर की तुलना में आकार में बहुत छोटा।
 - मॉड्यूलर:** सिस्टम और घटकों को फैक्ट्री में असेंबल कर एक इकाई के रूप में साइट पर ले जाकर स्थापित किया जा सकता है।
 - रिएक्टर्स:** परमाणु विखंडन की प्रक्रिया से ऊर्जा उत्पादन के लिए ऊष्मा उत्पन्न करते हैं।
- SMRs के चार मुख्य प्रकार हैं: लाइट वॉटर, हार्ड टेम्परेचर गैस, लिकिव्ड मेटल, और मोल्टन सॉल्ट।
- वर्तमान में केवल दो SMR परियोजनाएँ ही विश्व स्तर पर चालू हुई हैं:
 - रूस की अकादेमिक लोमोनोसोव फ्लोटिंग पावर यूनिट, जिसमें दो 35 MWe मॉड्यूल हैं और जो 2020 से व्यावसायिक उपयोग में है।
 - चीन की HTR-PM डेमो परियोजना, जिसे 2021 में ग्रिड से जोड़ा गया और 2023 में पूर्ण व्यावसायिक संचालन शुरू हुआ।

चिंताएँ क्या हैं?

- नियामक चुनौतियाँ:** वर्तमान परमाणु नियामक ढांचा मुख्य रूप से बड़े रिएक्टरों के लिए डिज़ाइन किया गया है।
 - SMRs का उपयोग परमाणु हथियारों के लिए सामग्री उत्पादन और सैन्य स्थलों के साथ सह-स्थापना की संभावना अप्रसार (non-proliferation) संबंधी चिंताएँ उत्पन्न करती हैं।

- कानूनी अड़चनें:** भारत का “परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010” ऑपरेटर की जिम्मेदारी को उपकरण आपूर्तिकर्ताओं पर डालता है, जिससे वित्तीय जोखिम के कारण विदेशी निवेशक हतोत्साहित होते हैं।
- उच्च प्रारंभिक लागत:** यद्यपि SMRs को दीर्घकालिक रूप से अधिक लागत प्रभावी माना जाता है, लेकिन प्रारंभिक पूँजी निवेश काफी अधिक होता है।
- अपशिष्ट प्रबंधन:** परमाणु अपशिष्ट को संभालना और उसका निपटान एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है।
- आपूर्ति श्रृंखला और निर्माण:** SMRs के घटकों के लिए एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला विकसित करना और गुणवत्ता निर्माण प्रक्रियाएँ सुनिश्चित करना उनकी सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

वैश्विक SMR नियामक सुधार

- इन चुनौतियों से निपटने के लिए, विश्व भर के देश SMR विनियमों में छह प्रमुख तरीकों से सुधार कर रहे हैं:
 - बड़े रिएक्टर-विशिष्ट नियमों के स्थान पर तकनीक-टटस्थ ढांचे;
 - फ्लीट अनुमोदन और संयुक्त निर्माण-संचालन लाइसेंस सहित सरलीकृत लाइसेंसिंग;
 - फैक्ट्री निर्माण प्रमाणन के साथ मॉड्यूलर निर्माण की सुविधा;
 - अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) मानकों और डिज़ाइन की पारस्परिक मान्यता के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सामंजस्य;
 - छोटे संयंत्रों के जोखिम के अनुपात में आपातकालीन योजना क्षेत्रों और स्टाफिंग को समायोजित करने वाली जोखिम-आधारित आवश्यकताएँ;
 - अनुवर्ती इकाइयों के लिए त्वरित तैनाती मार्ग।

भारत की SMRs की दिशा में पहल

- मुंबई स्थित भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर (BARC) में SMRs पर अनुसंधान और विकास जारी है।
- इस पहल के अंतर्गत “भारत स्मॉल रिएक्टर (BSR)” एक प्रमुख परियोजना है, जिसका उद्देश्य मौजूदा रिएक्टरों को पुनः डिज़ाइन कर अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं को शामिल करना और उनकी दक्षता बढ़ाना है।

- भारत ने SMRs के विकास के लिए ₹20,000 करोड़ का अनुसंधान एवं विकास मिशन घोषित किया है।
- भारत का लक्ष्य 2033 तक कम से कम पाँच स्वदेशी रूप से विकसित रिएक्टरों की तैनाती करना है।
- भारत और फ्रांस ने SMRs और उन्नत मॉड्यूलर रिएक्टर्स (AMRs) पर केंद्रित एक सहयोग कार्यक्रम शुरू किया है।

आगे की राह

- डेटा केंद्र भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था और एआई भविष्य के केंद्र में हैं, लेकिन उनकी ऊर्जा तीव्रता एक स्थिरता संकट उत्पन्न करती है।
- SMRs एक रणनीतिक अवसर प्रस्तुत करते हैं: विश्वसनीय, हरित ऊर्जा सुनिश्चित करना, साथ ही घरेलू परमाणु निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- हालांकि, इस दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने के लिए विधायी सुधार, दायित्व संबंधी चिंताओं का समाधान, और सुरक्षा व जन विश्वास सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक होगा।

Source: TH

नेट-ज़ीरो भारत के लिए कार्बन कैप्चर

संदर्भ

- महासागर-आधारित कार्बन कैप्चर भारत को 2070 तक नेट-ज़ीरो लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता कर सकता है, जिससे इसके समुद्र कार्बन हटाने और ब्लू ग्रोथ के इंजन बन सकते हैं।

कार्बन कैप्चर, उपयोग और भंडारण (CCUS) क्या है?

- अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) के अनुसार CCUS तकनीकों का एक समूह है जो बड़े और स्थायी CO₂ उत्सर्जन स्रोतों — जैसे जीवाशम ईंधन आधारित विद्युत संयंत्रों और अन्य उद्योगों — से CO₂ को अवशोषित करने के लिए उपयोग होता है।
- CCUS में अवशोषित किए गए CO₂ को विभिन्न अनुप्रयोगों में उपयोग के लिए या स्थायी भंडारण हेतु भूर्भूय संरचनाओं या समाप्त तेल और गैस क्षेत्रों में इंजेक्शन के लिए स्थानांतरित करना भी शामिल है।

भारत की उत्सर्जन कटौती प्रतिबद्धताएँ

- भारत ने LiFE मिशन (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) शुरू किया है और पेरिस समझौते के अंतर्गत अपने NDCs (राष्ट्रीय रूप से निर्धारित योगदान) को अद्यतन किया है।
- अद्यतन NDC 2022 के तहत भारत ने संकल्प लिया है:
 - 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता (GDP की प्रति इकाई पर CO₂ की मात्रा) में 45% की कटौती (2005 के स्तर की तुलना में)।
 - 2030 तक स्थापित विद्युत क्षमता का 50% गैर-जीवाशम ईंधन स्रोतों से आएगा।
 - वर्नों और वृक्ष आवरण को बढ़ाकर 2.5 से 3 बिलियन टन CO₂ समतुल्य (GtCO₂e) का कार्बन सिंक बनाना।

महासागर-आधारित नकारात्मक उत्सर्जन तकनीकें

- ओशन एल्केलिनिटी एनहांसमेंट (OAE): समुद्री जल की प्राकृतिक CO₂ अवशोषण क्षमता को चूना या ओलिविन जैसे क्षारीय खनिजों की सहायता से बढ़ाता है। यह 100,000 वर्षों से अधिक के लिए स्थिर कार्बन भंडारण प्रदान करता है।
- जैविक कार्बन कैप्चर: इसमें फाइटोप्लैक्टन, समुद्री शैवाल और माइक्रोएल्गी शामिल हैं जो प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से CO₂ को अवशोषित करते हैं।
- महासागर उर्वरीकरण: फाइटोप्लैक्टन की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फॉस्फोरस, आयरन या नाइट्रोजन जैसे आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों को समुद्र के विशिष्ट मैक्रोन्यूट्रिएंट-समृद्ध क्षेत्रों में जोड़ा जाता है, जिससे दीर्घकालिक गहरे महासागर कार्बन भंडारण संभव होता है।
- समुद्री संरक्षित क्षेत्र: जिनमें प्रवाल भित्तियाँ और मैग्नेशियम शामिल हैं (जो महासागर का 8.3 प्रतिशत हैं), महासागर स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
 - मैग्नेशियम: प्रति हेक्टेयर 1,000 टन तक कार्बन को संग्रहीत कर सकते हैं।

भारत की महासागर-आधारित CCUS की संभावनाएँ

- भारत, जिसकी वार्षिक CO_2 उत्सर्जन मात्रा 2.6 गीगाटन है, अमेरिका और चीन के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक है।
- भारत का 11,098.8 किमी लंबा समुद्री तट और 20 लाख वर्ग किमी का विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) महासागर-आधारित कार्बन अवशोषण के लिए विशाल अवसर प्रदान करता है।
 - भारत के महासागर क्षेत्र के 20% हिस्से में समुद्री शैवाल की खेती से प्रति वर्ष 0.6–1 गीगाटन CO_2 हटाया जा सकता है।
 - OAE को एक्वाकल्चर के साथ मिलाकर अत्यधिक सतत और स्थिर कार्बन भंडारण प्राप्त किया जा सकता है, साथ ही समुद्री उत्पादकता भी बढ़ाई जा सकती है।
- पकड़े गए कार्बन का उपयोग बायोफ्यूल, औषधियाँ, ग्रीन हाइड्रोजन, उर्वरक, बायोपॉलिमर एवं निर्माण सामग्री में किया जा सकता है, जिससे परिपत्र कार्बन अर्थव्यवस्थाओं और ब्लू ग्रोथ को बढ़ावा मिलता है।

क्या हैं चुनौतियाँ?

- पारिस्थितिक चिंताएँ:** महासागर की रसायनशास्त्र या पोषक तत्व संतुलन को बदलना समुद्री जैव विविधता को प्रभावित कर सकता है।
- नियामक अंतराल:** भारत में समुद्री कार्बन शासन के लिए व्यापक ढांचा नहीं है।
- उच्च पूँजी लागत:** प्रारंभिक चरण के महासागर CCUS परियोजनाओं को दीर्घकालिक वित्तपोषण और जोखिम न्यूनीकरण की आवश्यकता होती है।

आगे की राह

- नीतिगत एकीकरण:** महासागर-आधारित CCUS को भारत की राष्ट्रीय कार्बन कैप्चर नीति और ब्लू इकोनॉमी मिशन में शामिल करें।
- अनुसंधान और विकास:** डीप ओशन मिशन के अंतर्गत ओशन एल्केलिनिटी एनहांसमेंट और जैविक कार्बन फार्मिंग पर पायलट परियोजनाएँ स्थापित करें।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी:** ब्लू कार्बन पुनर्स्थापन और समुद्री CDR स्टार्टअप्स के लिए वित्तीय प्रोत्साहन एवं कार्बन क्रेडिट प्रदान करें।

- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** जापान, नॉर्वे और यूरोपीय संघ जैसे वैश्विक CCUS केंद्रों के साथ तकनीकी हस्तांतरण एवं ज्ञान विनिमय के लिए साझेदारी करें।

Source: ORF

संक्षिप्त समाचार

भारत के शाही राज्यों का संग्रहालय

संदर्भ

- प्रधानमंत्री ने गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास भारत के शाही राज्यों के संग्रहालय की आधारशिला रखी।

परिचय

- उद्देश्य:** अतीत की स्मृतियों को संरक्षित करना और एकता व बलिदान की शाश्वत भावना से आगामी पीढ़ियों को प्रेरित करना।
- यह संग्रहालय ₹367 करोड़ की लागत से बनाया जाएगा और इसमें चार विषयगत दीर्घाएँ होंगी।
- यह संग्रहालय एकता नगर में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास पाँच एकड़ भूमि पर निर्मित किया जाएगा।



ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के समय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश शासित क्षेत्रों के साथ-साथ 550 से अधिक रियासतें और राज्य शामिल थे।
- तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में रियासतों के शासकों को “इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन” के माध्यम से भारत में विलय के लिए सहमत किया गया।
- 1949 तक लगभग सभी रियासतें भारतीय संघ में शामिल हो चुकी थीं, जिससे एक एकीकृत और संप्रभु गणराज्य की नींव रखी गई।

- यह शांतिपूर्ण एकीकरण भारत की कूटनीति, समावेशिता और राष्ट्रीय निर्माण की भावना का प्रतीक है।

Source: PIB

जॉर्जिया भारतीय मेडिकल छात्रों के लिए नया केंद्र

समाचार में

- यूक्रेन में चल रहे युद्ध के बीच, जॉर्जिया भारतीय मेडिकल छात्रों के लिए तेजी से एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में उभरा है।
- शैक्षणिक उद्देश्यों से संबंधित प्रेषण 2024–25 में \$50.25 मिलियन तक पहुँच गया है — जो 2018–19 की तुलना में पाँच गुना वृद्धि है।
- इसकी लोकप्रियता का कारण है किफायती मेडिकल पाठ्यक्रम, सरल निवास कानून, और यूरोप के निकटता।

जॉर्जिया

यह काला सागर के पूर्वी किनारे पर स्थित है और इसकी सीमाएँ रूस, अज़रबैजान, आर्मेनिया और तुर्की से लगती हैं।



- इसमें तीन जातीय क्षेत्र शामिल हैं — अब्खाजिया, अजारिया और साउथ ओसेटिया — तथा इसकी राजधानी है त्विलिसी।
- यह समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है और मध्यकाल में एक शक्तिशाली राज्य था।
- इसने 1989 में संप्रभुता की घोषणा की और 1991 में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त की।

क्या आप जानते हैं?

- भारतीय रिजर्व बैंक की उदार प्रेषण योजना (Liberalised Remittance Scheme) के अंतर्गत भारतीय नागरिक प्रत्येक वर्ष शिक्षा और अन्य उद्देश्यों के लिए विदेश में \$250,000 तक भेज सकते हैं।

Source: IE

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बनाए 3 गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड

संदर्भ

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने देशव्यापी “स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान” (SNSPA) के तहत तीन गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड खिताब हासिल किए हैं।

परिचय

- प्राप्त किए गए रिकॉर्ड्स हैं:
 - एक महीने में सबसे अधिक लोगों का हेल्थ केयर प्लेटफॉर्म पर पंजीकरण।
 - एक सप्ताह में सबसे अधिक लोगों का ऑनलाइन ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग के लिए पंजीकरण।
 - एक सप्ताह में सबसे अधिक लोगों का राज्य स्तर पर ऑनलाइन वाइटल साइन स्क्रीनिंग के लिए पंजीकरण।

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान

- प्रधानमंत्री ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक पोषण माह के साथ मिलकर देशव्यापी “स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान” की शुरुआत की।
- यह अभियान महिलाओं, किशोरियों और बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण को बेहतर बनाने पर केंद्रित है।
- गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स से मिली यह मान्यता भारत के सामूहिक प्रयास का प्रमाण है — जिसमें सरकारी तंत्र, डिजिटल स्वास्थ्य नवाचार और सामुदायिक भागीदारी का समावेश है।

Source: TH

‘आभार’ ऑनलाइन स्टोर

समाचार में

- भारतीय रेलवे ‘आभार’ नामक नए ऑनलाइन स्टोर का समर्थन कर रहा है, जो देशी जनजातियों, हथकरघा बुनकरों, “वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट” (ODOP) और “भौगोलिक संकेतक” (GI) उत्पाद निर्माताओं द्वारा बनाए गए उपहार वस्तुओं को प्रदर्शित करता है, ताकि स्थानीय प्रतिभा एवं शिल्पकला को बढ़ावा दिया जा सके।

‘आभार’ ऑनलाइन स्टोर

- यह ऑनलाइन स्टोर सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) द्वारा होस्ट किया गया है तथा उपहार वस्तुएँ विशेष रूप से सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम (CCIE), खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC), तथा विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य हस्तशिल्प एवं हथकरघा एम्पोरियम से प्राप्त की जाती हैं।
- यह स्टोर ‘वोकल फॉर लोकल’ अभियान के साथ प्रचारित किया जा रहा है तथा इसमें विभिन्न प्रकार के लेख और हैम्पर्स उपलब्ध होंगे, जिन्हें आधिकारिक कार्यक्रमों, समारोहों एवं आयोजनों में उपयोग किया जा सकता है।
- इसका उद्देश्य सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देना और ग्रामीण कारीगरों, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों तथा पारंपरिक उद्योगों को समर्थन देना है।

क्या आप जानते हैं?

- ‘वन स्टेशन वन प्रोडक्ट’ (OSOP) योजना रेलवे द्वारा स्थानीय और देशी उत्पादों को प्रोत्साहन देने तथा वंचित समुदायों के लिए अतिरिक्त आय के अवसर प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी।

Source :TH

जनगणना स्व-गणना परीक्षण शुरू होगा

समाचार में

- सरकार ने जनगणना 2027 के प्रथम चरण के लिए स्व-गणना मॉड्यूल का परीक्षण शुरू कर दिया है, जो भारत की प्रथम डिजिटल और जाति-आधारित जनगणना को चिह्नित करता है।

पृष्ठभूमि

- COVID-19 महामारी के कारण अनिश्चितकाल के लिए स्थगित की गई जनगणना 2021 को अब जनसंख्या जनगणना 2027 के रूप में जाना जा रहा है।
- यह प्रक्रिया राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR) के अद्यतन को शामिल नहीं करती है, जिसे अंतिम बार 2015–16 में संशोधित किया गया था।
 - 2010 में निर्मित NPR को नागरिकों के राष्ट्रीय रजिस्टर (NRC) की दिशा में पहला कदम माना जाता है। पिछली जनगणना प्रक्रियाओं के विपरीत, जाति गणना की कार्यप्रणाली अभी समीक्षा के अधीन है, और केवल HLO चरण का परीक्षण किया जा रहा है।
- योजना के अनुसार 2021 की जनगणना का पूर्व-परीक्षण 2019 में हुआ था, जिसमें 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 76 जिलों में 26 लाख से अधिक लोगों को शामिल किया गया था। 2019 में राज्य सरकारों से लगभग 6,000 गणनाकर्ता और 1,100 पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए थे।

स्व-गणना परीक्षण

- भारत की प्रथम डिजिटल और जाति-गणना आधारित जनसंख्या जनगणना अपने पूर्व-परीक्षण चरण की शुरुआत कर रही है, जिसमें गणनाकर्ता समर्पित पोर्टल के माध्यम से चयनित नागरिकों को स्व-गणना में सहायता प्रदान करेंगे।

इस चरण को “गृह-सूचीकरण और आवास जनगणना” (HLO) कहा जाता है, जिसे दो चरणों में परीक्षण किया जाएगा — स्व-गणना और सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के नमूना क्षेत्रों में फ़िल्ड सत्यापन।

Taking a count

Census 2027, which is the first such digital exercise, will have several new features

- | | |
|---|--|
| ■ Online mode (Self-enumeration) | ■ Data collection through mobile apps |
| ■ Geo-referenced digital maps to support precise location-based reports | ■ Geo-referencing of enumeration blocks |
| ■ Use of Artificial Intelligence (AI) tools | ■ Enumeration of caste of all members of the household |



- यह चरण आवास, सुविधाओं और संपत्तियों से संबंधित 30 प्रश्नों को शामिल करेगा।
 - गणनाकर्ता डेटा को कुशलतापूर्वक एकत्रित और सत्यापित करने के लिए डिजिटल लेआउट मैप एवं जनगणना प्रबंधन एवं निगरानी प्रणाली से जुड़ा मोबाइल ऐप उपयोग करेंगे।

Source :TH

डिजिटल समुद्री मत्स्य पालन जनगणना 2025

संदर्भ

- केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय ने मरीन फिशरीज जनगणना (MFC) 2025 के घरेलू गणना चरण और VYAS-BHARAT तथा VYAS-SUTRA ऐप्स का शुभारंभ किया।

परिचय

- पूर्णत:** डिजिटल और भू-संदर्भित जनगणना: MFC 2025 पारंपरिक कागज आधारित विधियों से हटकर पूरी तरह डिजिटल प्रक्रिया अपनाता है।
 - यह पाँचवां संस्करण 13 तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (जिसमें अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप शामिल हैं) के लगभग 5,000 समुद्री मछली पकड़ने वाले गाँवों में 12 लाख मछुआरा परिवारों को कवर करता है।
- डिजिटल संरचना:** यह डिजिटल प्रक्रिया ICAR-सेंट्रल मरीन फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट (CMFRI) द्वारा विकसित तीन बहुभाषी एंड्रॉइड ऐप्स द्वारा संचालित है:
 - VyAS-NAV:** मछली पकड़ने वाले गाँवों और बंदरगाहों की पुष्टि के लिए।
 - VyAS-BHARAT:** घरेलू और बुनियादी ढांचे की गणना के लिए।

- VyAS-SUTRA:** डेटा संग्रह की वास्तविक समय निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए।
- विस्तारित सामाजिक-आर्थिक डेटा:** पहली बार, इस गणना में परिवार की कुल आय, घर का स्वामित्व, बकाया देनदारियाँ और ऋण के स्रोत जैसे महत्वपूर्ण संकेतकों पर विस्तृत जानकारी शामिल की गई है।

Source: PIB

केंद्रीय गृहमंत्री दक्षता पदक

संदर्भ

- वर्ष 2025 के लिए केंद्रीय गृहमंत्री दक्षता पदक 1,466 कर्मियों को प्रदान किया गया है।

परिचय

- केंद्रीय गृहमंत्री दक्षता पदक की स्थापना गृह मंत्रालय (MHA) द्वारा की गई थी।
- यह पदक संचालन में उत्कृष्टता, असाधारण जांच सेवा, साहस और दृढ़ संकल्प से युक्त खुफिया कार्य, तथा सेवा में कार्यरत सरकारी वैज्ञानिकों द्वारा फॉरेंसिक विज्ञान में सराहनीय योगदान को मान्यता देता है।
- यह पदक प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर को प्रदान किया जाता है, जो भारत के प्रथम गृहमंत्री और राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को चिह्नित करता है।
- मान्यता के प्रमुख क्षेत्र:** विशेष अभियान, जांच, खुफिया कार्य और फॉरेंसिक विज्ञान।
- यह पदक पुलिस बलों, सुरक्षा संगठनों, खुफिया शाखाओं/विंग्स, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs), केंद्रीय पुलिस संगठनों (CPOs), तथा केंद्र, राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के फॉरेंसिक विज्ञान इकाइयों के सदस्यों को प्रदान किया जाता है।

Source: AIR

